

एआई के चक्रव्यूह में फंसी दुनिया



वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में एक सवाल बार-बार उठ रहा है कि जब एआई के शीर्ष कारोबारी और शोधकर्ता खुद कह रहे हैं कि उन्नत एआई मानवता के लिए गंभीर खतरा बन सकता है, तो फिर वे उसी तकनीक के विकास में अरबों डॉलर क्यों लगा रहे हैं?

यहीं आकर एआई कंपनियों के प्रमुखों के बयानों और उनके वास्तविक काम के बीच के विरोधाभास पर सवाल उठता है।

एक ओर ओपनएआई, एंथ्रोपिक और अन्य एआई कंपनियों से जुड़े प्रमुख लोग चेतावनी दे रहे हैं कि भविष्य में एआई इतना सक्षम हो सकता है कि वह खुद को लगातार बेहतर बनाते हुए मानव नियंत्रण से बाहर निकल जाएगा। इसे रिकर्सिव सेल्फ इम्प्रूवमेंट कहा गया है।

दूसरी ओर, यही कंपनियाँ एआई के विकास को रोकने के बजाय कंप्यूटिंग क्षमता और बुनियादी ढाँचे पर भारी निवेश कर रही हैं।

संपादकीय में दिए आँकड़ों के अनुसार, 2026 की पहली छमाही में ओपनएआई, एंथ्रोपिक, एक्सएआई और प्रोमेथियस को अमेरिका के ग्रोथ-इक्विटी क्षेत्र में 10 करोड़ डॉलर या उससे अधिक के 336 सौदों से जुटाए गए 372 अरब डॉलर में लगभग तीन-चौथाई हिस्सा मिला।

मुख्य बातें -

1. एआई से नौकरियों को लेकर विरोधाभासी दावे -

एआई कंपनियाँ कभी बड़े पैमाने पर नौकरियाँ खत्म होने की चेतावनी देती हैं और कभी कहती हैं कि ऐसा संकट तत्काल आने वाला नहीं है।

2. एआई के नियंत्रण से बाहर होने का खतरा -

कंपनियों से जुड़े कुछ प्रमुख लोग चेतावनी दे रहे हैं कि अत्यधिक सक्षम एआई भविष्य में मानव नियंत्रण से बाहर हो सकता है और गंभीर नुकसान कर सकता है।

3. सुरक्षा के लिए स्पष्ट व्यवस्था का अभाव -

सुरक्षा के लिए व्यापक सेफ्टी बार, स्वतंत्र ऑडिट तथा सरकारों और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की निगरानी का प्रस्ताव दिया गया है। लेकिन सवाल यह है कि इन्हें लागू कौन करेगा और किस तरह करेगा?

4. कथनी और करनी में अंतर -

सबसे बड़ा विरोधाभास यही है कि कंपनियाँ एआई के संभावित खतरों की बात करते हुए भी उसके विकास की गति कम नहीं कर रही हैं। बल्कि कंप्यूटिंग क्षमता बढ़ाने के लिए भारी निवेश जारी है।

5. सीईओ की चेतावनियों के पीछे दूसरे हित होने की संभावना -

एआई को लेकर अत्यधिक चेतावनी का इस्तेमाल कंपनियाँ अपने बाजार की स्थिति मजबूत करने, नए साइबर सुरक्षा उत्पाद बेचने या निवेश जुटाने जैसे व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए भी कर सकती हैं।

6. एआई शोधकर्ताओं की चेतावनियाँ -

जैकब जैक्सन ने ओपनएआई और बाद में एंथ्रोपिक छोड़ने तथा दोनों कंपनियों पर स्व-विकसित सुपर इंटेलिजेंस की ओर तेजी से बढ़ने का आरोप लगाया है। उनके एक पूर्व सहकर्मी ने अगले दशक में एआई से मानवता के विनाश के जोखिम को 10% से अधिक बताए जाने का भी जिक्र किया है।

एआई के मामले में चुनौती केवल यह नहीं है कि एआई कितना शक्तिशाली होगा, बल्कि यह भी है कि उस शक्ति पर नियंत्रण किसका होगा, जवाबदेही किसकी होगी और विकास की गति कौन तय करेगा।

इसलिए एआई मॉडल में नवाचार और सुरक्षा के बीच संतुलन, पारदर्शिता, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और स्पष्ट जवाबदेही महत्वपूर्ण मुद्दे बन जाते हैं।

'द टाइम्स ऑफ इंडिया' में प्रकाशित संपादकीय पर आधारित। 14/09/26

